ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
March 2024 : 1(2)01-02
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

श्री विनोद कुमार झा
सेवानिवृत प्रधानाध्यापक

Corresponding Author :
श्री विनोद कुमार झा
सेवानिवृत प्रधानाध्यापक

फलों का राजा आम

भारत प्राकृतिक विविधताओं का देश है। यहाँ की भूमि, जंगल, पहाड़, नदी, फल, फूल सबों में विविधता पायी जाती है। यहाँ के विभिन्न मौसम में अनेकों फल-फूल पाये जाते हैं। उन्हीं मौसमी फलों में ग्रीष्मकालीन फल है- 'आम'। जिसके लिए अकबर इलाहाबादी ने अपने दोस्त मुंशी निसार को लिखा:-

"नामा न कोई यार का पैगाम भेजिये,
इस फसल में जो भेजिये तो बस आम भेजिये।"

मिर्जा ग़ालिब ने आम पर 32 शेर लिखे। यहाँ तक कि महाकवि कालिदास ने भी आम का गुणगान किया।

आम को फलों का राजा कहा जाता है। भारत का 'राष्ट्रीय फल' आम है। इतना ही नहीं पाकिस्तान तथा फिलिपीन्स का भी 'राष्ट्रीय फल' आम है। आम का वैज्ञानिक नाम 'मैंगीफेरा इंडिका' है। वेदों में उसे विलास का प्रतीक कहा गया तथा बौद्धकालीन ग्रन्थ 'अमरकोश' में प्रशंसनीय। आम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ ही विटामिन 'सी' और विटामिन 'ए' का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके फल का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है।

विभिन्न भाषाओं में आम को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाता है। संस्कृत में 'आम्र' तथा अंग्रेजी में 'मैंगों' कहा जाता है। हिंदी, मराठी, बंगला तथा मैथली में– 'आम', मलयालम में- 'मान्न', तमिल में–'मैन-के' या 'मैन-गे' तथा पुर्त्तगाली में– 'मंगा' कहा जाता है (1490 में पुर्त्तगाली इसे केरल से पुर्त्तगाल ले गये थे।)।

आम की शान में प्रतिवर्ष लखनऊ,दिल्ली और गोवा में 'मैंगो फेस्टिवल' मनाया जाता है। आम की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा जाता है कि हनुमान जी ने रावण के बगीचे से आम के पेड़ के बीज लिए थे। किन्तु, विशेषज्ञ आम्र प्रजाति (मैंगीफेरा जीनस) की उत्पत्ति स्थल 'मलय प्रायद्वीप' को मानते हैं।

आम 4-5 ईसा पूर्व में अपने मूल जंगली रूप में उत्तर पूर्व भारत में 'असम' और 'म्यांमार' के जंगलों से आया। 18वीं सदी में एशिया से 'ब्राज़ील' और 'वेस्टइंडीज' पहुँचा। 1750 ई. में स्पेन से 'मैक्सिको' और फिर वहाँ से अमेरिका के 'फ्लोरिडा' पहुँचा। आज लगभग 60 से अधिक देशों में इसकी पैदावार होती है।

आम के फल की ऐतिहासिकता जगजाहिर है। सम्राट सिकंदर,चीनी यात्री ह्वेनसांग, मुस्लिम यात्री इब्नबतूता से लेकर फ्रायर और हैमिल्टन तक इसके मुरीद रहे। बादशाह अकबर ने बिहार के दरभंगा में 'लालबाग' तैयार करवाया जिसमे एक लाख पौंधे लगवाए। जो आज 'लाखी बाग' के नाम से जाना जाता है। बादशाह शाहजहाँ को बुरहानपुर के आम पसंद आए। रघुनाथ पेशवा ने मराठा वर्चस्व के नाम पर एक करोड़ आम का पेड़ लगवाया था।

राबर्ट क्लाइव का बेटा एडवर्ड क्लाइव ने 1798 ई. में मद्रास में विशाल आम का बाग लगवाया। आमों के राजा 'अलफांसो' का नाम भारत में पुर्त्तगाली उपनिवेश के संस्थापक जनरल अलफांसो डि अल्बुकुर्क के नाम पर पड़ा।

शेरशाह ने हुमायूँ को पटना के पास चौसा की लड़ाई में हराया तो आम की एक किस्म का नाम "चौसा" पड़ा। कहा जाता है कि लगभग 250 साल पहले बनारस में एक लंगड़ा साधू ने दो आम के पौधें लगाए। आम जब फला तो उसकी शोहरत पुरे शहर में फैलने के साथ काशी नरेश तक पहुँची। उसी लंगड़ा पुजारी के नाम पर इसका नाम 'लंगड़ा' पड़ गया। आज यह आम लाखों हेक्टेयर में होता है तथा पश्चिम एशिया, बांग्ला देश तथा ब्रिटेन में इसका निर्यात होता है। लगभग 200 साल पहले लखनऊ के नवाब के बगीचे में आम निकला,दशहरी गाँव के लोगों ने दावा कर दिया कि आम की वो पौध उनके आम के पेड़ से निकली है। वो पेड़ आज भी मौजूद है। उसे 'मदर ऑफ़ मैंगो ट्री' कहा जाता है। इस तरह वह आम 'दशहरी' कहलाया।

आंध्रप्रदेश के कुरनूल जिले के बैंगनपल्ली शहर के नाम पर वहाँ पैदा हुए आम का नाम 'बैंगनपल्ली' पड़ा। इसका छिलका हल्का सफेद होने के कारण इसे 'सफेदा' आम भी कहते हैं। इसी तरह लखनऊ के मलीहाबाद का आम 'मलीहाबादी' तथा बंबई का आम 'बंबईया' कहलाया। सहारनपुर के एक 2.5 कि.ग्रा. के भारी आम का नाम 'हाथीझूल' पड़ गया।

1934 ई. में जूनागढ़ के नवाब मुहम्मद महावत खान ने केसरिया छिलकेवाले आम का 'केसर' नाम दिया तो भादो में जन्मा आम 'भदही' कहलाया। इसी तरह तोता की चोंच जैसा तोतापरी,गुलाब की रंग एवं सुगंधवाला आम 'गुलाब खास' कहलाया। हरे और सिन्दूरी रंग के छिलकेवाला आम 'सिन्दूरी' कहलाया। आज आम की सैकडों नयी प्रजातियाँ कृषि विश्वविद्यालयों के प्रयोगशालाओं में ईजाद को जा चुकी हैं तथा अन्वेषण अभी भी जारी है। वैसे,यू .पी. का 'दशहरी',महाराष्ट्र का 'अलफांसों', दक्षिण भारत का 'बंगनपल्ली', पश्चिम बंगाल का 'मालदा', भागलपुर का 'जर्दालू' तथा गोवा का 'मनकुरद' और 'मुसरद' काफी लोकप्रिय है।

हिन्दी-अवधी के कवि पुष्पेन्दु जैन 'लखनवी' ने 'सफेदा' आम पर लिखा:-

"लखनऊ का सफेदा और लंगड़ा बनारस का,
यही दो आम जग में, उत्तम कहायो हैं।
लखनऊ के बादशाह, दूध से सिंचायो वाको,
वाही के वंशज, सफेदा नाम पायो हैं।
या से लड़न को, बनारस से धायो एक,
बीच में ही टूटी टाँग, लंगड़ा कहायो हैं।
कहैं 'पुष्पेन्दु' वाने, जतन अनेक कीने,
तबहूँ सफेदे की नजाकत न पायो हैं।"